

पूरोवाक्	पृष्ठ संख्या
प्रकाशकीय	vii
लेखकीय	ix
अध्याय एक- प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य : परम्परा एवं विकास	xi-xvi
1. आगम साहित्य	
2. आगमेतर साहित्य	
3. शिलालेखीय साहित्य	
4. काव्य साहित्य	
अध्याय दो- भारतीय दार्शनिक चिन्तनधारा : एक परिचय	61-88
1. दर्शन का स्वरूप एवं भेद-प्रभेद	
2. भारतीय दार्शनिक धाराएँ	
3. भारतीय दर्शन का वैशिष्ट्य	
अध्याय तीन- प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में वैदिक दर्शन : सिद्धान्त एवं विश्लेषण	89-112
1. आत्म-तत्त्व	
2. ब्रह्म-तत्त्व	
3. जगत्कर्तृत्व	
4. माया	
5. मोक्ष और मोक्ष के साधन	
6. अन्य मान्यताएँ	
7. निष्कर्ष	
अध्याय चार- प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में चार्वाकदर्शन : सिद्धान्त एवं विश्लेषण	113-120
1. आत्म-तत्त्व	
2. प्रमाण-चिन्तन	
3. मोक्ष	
4. निष्कर्ष	

अध्याय पाँच- प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में बौद्ध दर्शन : सिद्धान्त एवं विश्लेषण	121-132
1. क्षणिकवाद	
2. प्रतीत्यसमुत्पाद	
3. अनात्मवाद	
4. विज्ञानवाद	
5. शून्यवाद	
6. निर्वाण	
7. निष्कर्ष	
अध्याय छह- प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में सांख्य एवं योगदर्शन : सिद्धान्त एवं विश्लेषण	133-148
1. सत्कार्यवाद	
2. सृष्टिक्रम (पुरुष एवं प्रकृति)	
3. ईश्वर	
4. अष्टांग-योग	
5. निष्कर्ष	
अध्याय सात- उपसंहार	149-152
सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची	153-157